IJRAR.ORG E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"प्रभाकर कोलते का अमूर्त संसार – एक अध्ययन"

डा० ईश्वरचन्द गुप्ता (शोध निर्देशक)

एसोसिएट प्रोफेसर चित्रकला विभाग,धर्म समाज महाविद्यालय, अलीगढ़

श्री अनिल सोनी (शोधार्थी)

धर्म समाज महाविद्यालय, अलीगढ़

संबद्ध

डा० भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय आगरा

सार –

भारतीय चित्रकला के इतिहास में अमूर्त चित्रकला का एक ऐसा कालखण्ड रहा है जिसमें कलाकारों ने स्वच्छंद रूप से अपनी कलाकृति प्रस्तुत की जो प्राचीन समय से चली आ रही कला अभिव्यक्ति से बिल्कुल अलग थी। अमूर्त या एब्सट्रेक्ट का हिन्दी में शाब्दिक अर्थ होता है सार या निचोड़, इस तरह देखें तो अमूर्तन या एब्सट्रेक्सन वह कला है जो हमारे तथ्य का सार तत्व हमारे सामने रखता है। आकृति मूलक कृतियों में दर्शक वही देखता है जो कलाकार दिखाना चाहता है, जबकि अमूर्त कृतियों में दर्शक उसको समझने की कोशिश करता है।भारतीय समकालीन कला को देखें तो उभरते हुए अनेक कलाकार ऐसे हैं जो अमूर्त शैली में काम कर रहे हैं जैसे कविता जायसवाल, मीना राय, लक्ष्मण श्रेष्ठा, मनोज कंचगल, बोस कृष्णमचारी एवं प्रभाकर कोलते इत्यादि।

मैंने अपने इस शोध पत्र में अमूर्त चित्रण में विशेष ख्याति प्राप्त कलाकार प्रभाकर कोलते जी को शामिल किया है, जिन्होंने भारतीय कला में अमूर्त कला के नये आयाम प्रस्तुत किये हैं जिसको मैं अपने शोध पत्र के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहा हूँ।

Abstract-

There has been a period of abstract painting in the history of Indian painting in which artists freely presented their artwork which was completely different from the art expression of ancient times. In this way, abstract or abstraction is the art that puts the essence of our facts in front of us.If we look at Indian contemporary art, there are many emerging artists who are working in abstract style such as Kavita Jaiswal, Meena Rai, Laxman Shrestha Manoj Kanchgal, Bose Krishnamachari and Prabhakar Kolte etc. In this paper, I have made a special eminent artist in abstract illustration. Prabhakar Kolte ji who has presented new dimensions of abstract art in Indian art, which I am trying to present through my research paper.

शब्द कुंजी – अमूर्त कला, समकालीन, अभिव्यक्ति , कलाकार, चित्रण, कृतियां,स्वच्छंद

प्रस्तावना–

अमूर्त चित्रकला शैली का जन्म अनेक तत्वों के सम्मिश्रण से हुआ है। कला जगत की पुरातन पद्धतियों और परम्पराओं से विपरीत नवीन और स्वच्छंद अभिव्यक्ति करना इसका मुख्य उद्देश्य रहा।अमूर्त चित्रकला शैली में कलाकार स्वतंत्र रूप से अपने चित्रों की रचना करता है वह अपने विचारों को स्पष्ट रूप से कैनवास पर उकेरता है। इस शैली की विशेषता में चित्रकार हर बंधन से मुक्त होकर किसी भी रंग रेखा विषय आकार–प्रकार का उपयोग कर अपने चित्रों का निर्माण करता है। आदिकाल से गुफा चित्रों से निकल कर कला कई काल खण्डो में बदलती गयी हैं जिसमें चाहें पुनर्जागरण काल हो या प्रभाववाद, घनवाद या फिर जंगलवाद इन सभी तरह के कला वादों में अमूर्त कला के लिए 1910 का विशेष महत्व रहा है जहाँ इसकी शुरूआत हुई जिसके प्रमुख केन्द्र पेरिस, म्यूनिख, मास्को और फ्लोरेंस रहे। अमूर्त कला की शुरूआत सर्वप्रथम कैण्डिस्की द्वारा माना जाता है जिसमें आज तक निरन्तर प्रयोग होते आ रहे हैं। भारत में भी कई कला आन्दोलनों के बाद यहाँ के कलाकारों ने भी पाश्चात्य की कला का अनुसरण किया परन्तु उनके अपने अलग आयाम रहे। वर्तमान समय में भारत में सैंकड़ों कलाकार अमूर्त चित्रण द्वारा अपनी अभिव्यक्ति कर रहे हैं जिसमें हम इस शोध पत्र के माध्यम से वर्तमान समय में प्रख्यात अमूर्त कलाकार प्रभाकर कोलते जी के अमूर्त कला यात्रा के बारे में बात करेंगे।

प्रभाकर कोलते–

वर्तमान समय में अमूर्त कला में एक विशेष पहचान हासिल करने वाले कलाकार प्रभाकर कोलते जी का जन्म नेरूर, रत्नागिरी महाराष्ट्र में 27 जून 1946 में हुआ था। इन्होंने 1968 में अपना डिप्लोमा सर जे०जे० स्कूल ऑफ आर्ट्स से पूरा किया। 1972 से 1994 तक लगभग 22 वर्ष कला शिक्षण का कार्य किया, इनके शुरूआती कार्यों में स्विस कलाकार और शिक्षक पाल क्ली का एक मजबूत प्रभाव दिखाई देता है। इनके राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय बहुत सारी प्रदर्शनियाँ चलती रहती हैं। इन्हें अपनी पुस्तक 'फार्म आर्ट टू आर्ट' के लिए दुर्गा भागवत अवार्ड भी मिला।

कोलते जी ने अपने कार्यों में जो तकनीक अपनायी वह पाश्चात्य कलाकारों में मार्थ रोथको, राबर्ट मदरवेल, क्लाई फोड, अमूर्तवादि कलाकारों से अलग थी। इन्होंने जो भी रचनात्मक कार्य किये वो दक्षिण में के.सी.एस. पणिकर या उत्तर में जी. आर सन्तोष, बीरेन डे के चित्रों के समान न था एवं वह रजा, गायतोण्डे, रामकुमार और स्वामीनाथन जैसे अपने पूर्ववतियों से भी अलग थे। उनके पूरे करियर में अमूर्त अन्तर्राष्ट्रीय भावना बनी रही। जिससे वह निरन्तर इस कला में कार्यरत हैं।

कोलते जी के शुरूआती समय में विषय से सम्बन्धित कार्य करते थे, जिसमें आबजेक्टिव ड्राइंग, फीगर ड्राइंग, कम्पोजीशन इत्यादि जिस तरह से कला विद्यालयों में पढ़ाई होती थी वैसे ही उनका पाठ्यक्रम रहा पर उनकी वैचारिक स्थिति हमेशा कुछ अलग करने की रहती थी क्योंकि वो किसी भी विषय पर काम करने की अपेक्षा विचारों पर काम करना ज्यादा पसंद करते थे, इसी प्रकरण में एक साक्षात्कार में उन्होनें बताया कि एक बार जब वे चित्रकला डिप्लोमा के अन्तिम वर्ष में थे, तब एक दिन समूह में सभी आर्ट स्टूडेन्ट लैण्डस्केप करने आउटडोर गये, वहाँ बाकी सभी ने लैण्डस्केप किया पर मैने वहाँ मौज मस्ती की, और वहाँ के अनुकूल परिस्थिति को आत्मसात किया और उन्होंने वहाँ काम नहीं किया। अगले दिन घर आकर उन्होंने दो–तीन लैण्डस्केप किये जो बिल्कुल अलग थे। वहाँ के जैसे नहीं, पर सभी शिक्षकों को उनके ये लैण्डस्केप बहुत पसन्द आये और तब से उन्होंने स्वच्छंद और अमूर्त शैली में कार्य करना अच्छा लगने लगा।

उनका मानना है कि मेरी किसी भी पेन्टिग में विषय मायने नहीं रखते और किसी भी विषय पर पेन्टिग करना ये पुरानी बात है जिसको करते हुए बहुत साल बीत गये पर अब समझ में आया कि कला क्यों है और इसमें मैं कला को क्या दे सकता हूँ। इसलिए मैं अब विचारों पर काम करता हूँ, सब देखकर पेन्ट करते हैं, मैं पेन्ट करके देखता हूँ और इसमें जरूर कुछ न कुछ बदलाव होता जायेगा। विचारों को बाँधा नही जा सकता जैसे सेंजा ने प्रकृति या स्टिल लाइफ को कैसे ज्यामितीय रूप में बनाया और पिकासो ने कैसे क्यूबिस्टिक फार्म को रखा, पालक्ली ने कैसे बच्चों की तरह अपनी अभिव्यक्ति की।

कोलते जी ने अपने गुरू शंकर पलसीकर से बहुत कुछ सीखा साथ में, गायतोण्डे,सामंत, एवं रजा के कार्यों से प्रभावित रहते थे परन्तु इनके चित्रों में अपनी एक अलग सोच होती है जिसमें वह स्वयं बात करते हैं जिससे चित्र और चित्रकार में जो सामंजस्य बने उसमें जीवंतता स्थापित हो सके।

आज की कला शिक्षा के बारे में उनका नजरिया बिल्कुल विपरीत और साफ है। जो 45–50 वर्षों से निरन्तर चला आ रहा है ऐसे में युवा स्वयं को उसी बंधन में बंधकर काम करता है जो उनकी नजर से ठीक नहीं है, कॉलेज अपने बने बनाये सांचे में ढाल रही है, इससे कला में रचनात्मकता का अभाव हो रहा है। इस प्रयास में कोलते जी ने अपने गुरू शंकर पलीसकर की स्मृति में एक कला संस्थान खोलने का प्रयास किया है, जहाँ स्वतंत्र रूप से कलाकार कार्य कर सकें, एवं कला जगत में नये–नये कीर्तिमानों को स्थापित कर सकें।आज वर्तमान में बहुत सारे कलाकार अमूर्त शैली में कार्य कर रहे हैं और उसमें नये प्रयोग करके भारतीय कला को नई दिशा दिलाने काप्रयास कर रहे हैं।

Prabhakar Kolte's Paintings

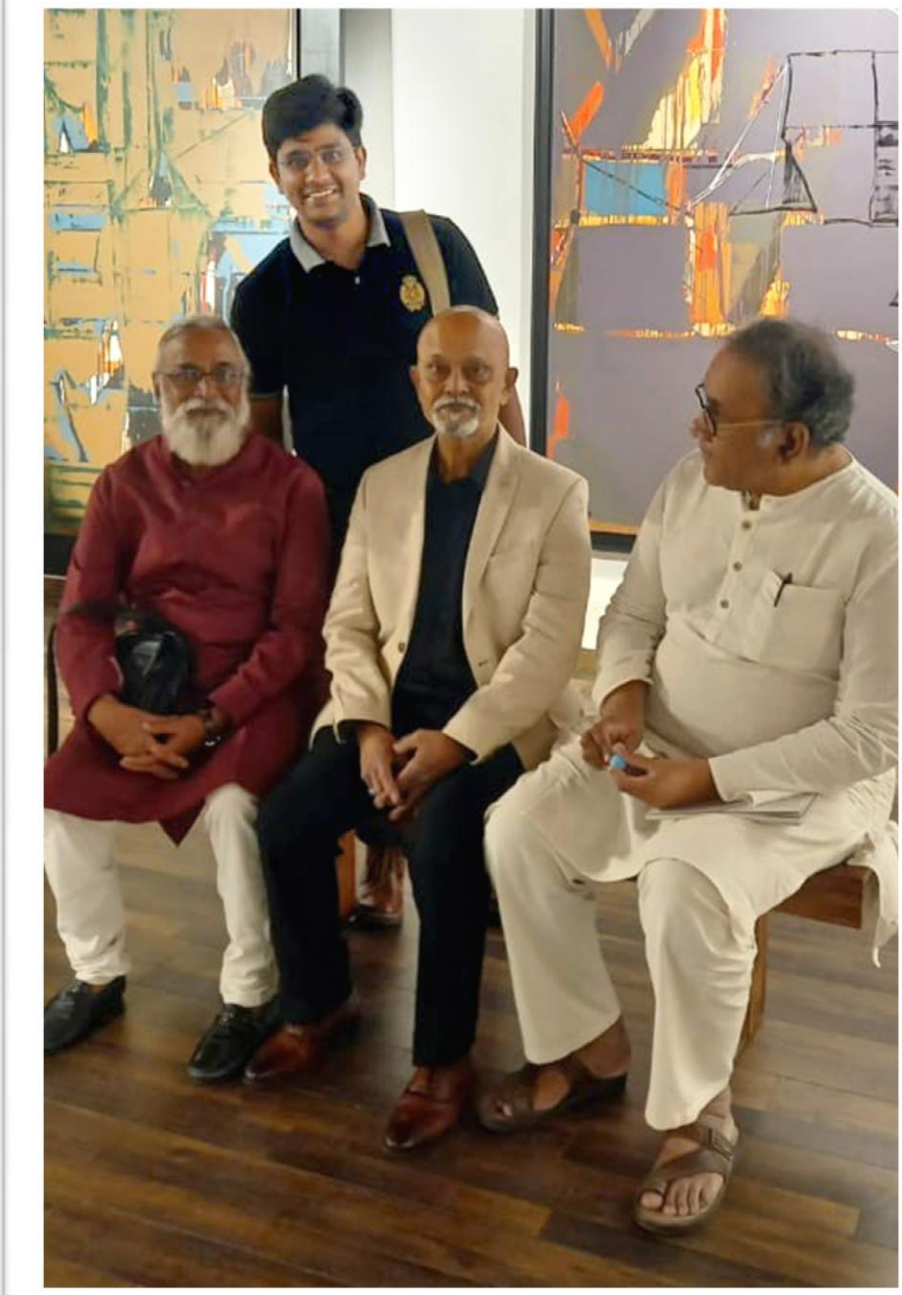

प्रभाकर कोलते जी की एकल प्रदर्षनी के साथ **THE MIND'S EYE,**

Treauser Art Gallery at New Delhiके साथ में।

उद्देश्यः–

वर्तमान परिवेश में कला का जिस तरह का बाजारीकरण हो रहा है, उसमें कलाकार कहीं न कहीं अपनी स्वतंत्रता खोता जा रहा है। प्रभाकर कोलते जी ने इस विषय में सीधे अपने विचारों को रखा चाहे वह आर्ट कालेज में पढ़ाते हुए हों या फिर अपने साक्षात्कारों में। विचारों को रखते हुए कला में कोई बंधन नहीं होना चाहिए, उन्होंने अपनी इसी दार्शनिकता से कार्य किया एवं किसी विषय–वस्तु को विषय में न बाँधकर, स्वच्छंद रूप से हो। इस शोध का उद्देश्य यह भी है कि किस तरह कोई भी कलाकार कला में अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम चुनता है, चाहें वो चित्रकला हो या मूर्ति कला हो, संगीत या काव्य, सभी में अपनी व्यक्तिगत अभिव्यक्ति होती है बस हमें अपने तरीके से कार्य करने की जरूरत है न कि बाजार के हिसाब से। सच्चा कलाकार वही है जो कला को कुछ नया आयाम दे और वो नहीं जो कलाकेवल अपने स्वार्थ के लिये करे।

निष्कर्षः–

शोध पत्र के निष्कर्ष में यह बात सामने निकलकर आती है कि कला अभिव्यक्ति की कोई भी सीमा प्रतिबन्धित न होकर स्वच्छंद है। परन्तु उसमें भी अपने समय काल में चल रही परिस्थिति एवं विचार का संतुलन होना चाहिए, मूर्त हो या अमूर्त कला अभिव्यक्ति उसमें कलाकार की मौलिकता होनी चाहिए। वर्तमान में कला जगत में बहुत सारे शोध हो रहे हैं जिसमें कलाकार नयी–2 तकनीकों के प्रयोग करने की कोशिश करता और अपनी नयी पहचान बनाने में सफल होता। कोलते जी के अमूर्त संसार से भी हमें यही प्रेरणा मिलती है कि कला को कोई बंधन या विषय में न बांधकर, उसको स्वतंत्र रूप अभिव्यक्ति करने की सोच होनी चाहिए और कलाकारों को चित्रों को बाजारीकरण के हिसाब से नहीं बल्कि अपने रचनात्मकता से कला को नया आयाम देना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः–

अग्रवाल गीता, कला मूर्त और अमूर्त,प्रोफेसर, साहूराम स्वरूप महिला महाविद्यालय बरेली।

भारद्वाज विनोद – वृहद आधुनिक कला कोष, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, ।

बाजपेयी अशोक – समकालीन कला अंक–21, ललितकला अकादमी, नई दिल्ली 2002

www.patrika.com

singh63.blogspot.com

samalochan.blogspot.com